पाठ 3.4 : रीढ़ की हड्डी

जगदीश चंद्र माथुर

*सुपरिचित नाटककार **जगदीश चंद्र माथुर** का जन्म सन् 16 जुलाई 1917 ई. को उत्तर प्रदेश के खुर्जा, ज़िला बुलंदशहर में हुआ। उन्होंने ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित नाटक लिखे हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ **भोर का तारा, ओ मेरे सपने** (एकांकी), **शारदीया कोणार्क, पहला राजा** (नाटक), **जिन्होंने जीना सीखा** तथा **दस तस्वीरें** (रेखाचित्र) आदि हैं। जगदीश चंद्र माथुर का निधन सन् 14 मई 1978 ई. को हुआ।*

पात्र परिचय

उमा	:	लड़की
रामस्वरूप	:	लड़की का पिता
प्रेमा	:	लड़की की माता
शंकर	:	लड़का
गोपाल प्रसाद	:	लड़के का बाप
रतन	:	रामस्वरूप का नौकर

(मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाजे में आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आती है वह अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं। एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते–चलते कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा उनके नौकर ने पकड़ रखा है।)

रामस्वरूप : अबे, धीरे–धीरे चल। . . . अबे, तख्त को उधर मोड़ दे . . उधर।

. . . बस । (तख्त के रखे जाने की आवाज आती है।)

नौकर : बिछा दूँ साहब?

रामस्वरूप : (जरा तेज आवाज़) और क्या करेगा? परमात्मा के यहाँ जब अक्ल बँट रही थी, तो तू देर से पहुँचा था क्या? ....बिछा दूँ साब.....और ये पसीना किसलिए बहाया है?

नौकर : (तख्ता बिछाता है।) ही – ही –ही।

रामस्वरूप : हँसता क्यों है? . . . अबे, हमने भी जवानी में कसरत की है। कलसों से नहाता था लोटों की तरह। तख्त क्या चीज़ है?. . . उसे सीधा कर . . . यों बस। और सुन, बहू जी से दरी माँग ला, इसके ऊपर बिछाने के लिए। . . . चद्दर भी, कल जो धोबी के यहाँ से आई है, वही। (नौकर जाता है। बाबू साहब इस बीच में मेजपोश ठीक करते हैं। एक झाड़न से गुलदस्ता साफ करते कुर्सियों पर भी दो–चार हाथ लगाते हैं। सहसा घर की मालकिन प्रेमा का आना। गंदुमी रंग, छोटा कद, चेहरे की आवाज़ से ज़ाहिर होता है कि किसी काम में बहुत व्यस्त है। उनके पीछे–पीछे भीगी बिल्ली की तरह नौकर आ रहा है।. . . खाली हाथ। बाबू रामस्वरूप दोनों की तरफ देखने लगते हैं।)

प्रेमा : मैं कहती हूँ, तुम्हें इस वक्त धोती की क्या जरुरत पड़ गई? एक तो वैसे ही जल्दी–जल्दी में . . .

रामस्वरूप : धोती?

प्रेमा : हाँ, अभी तो बदलकर आए हो और फिर न जाने किसलिए . . .

रामस्वरूप : लेकिन धोती माँगी किसने?

प्रेमा : यही तो कह रहा था रतन?

रामस्वरूप : क्यों बे रतन, तेरे कानों में डाट लगी है? मैंने कहा था– धोबी के यहाँ से जो चादर आई है, उसे माँग ला। . . . अब तेरे लिए दिमाग कहाँ से लाऊँ। उल्लू कहीं का!

प्रेमा : अच्छा जा, पूजावाली कोठरी में लकड़ी के बाक्स के ऊपर धुले हुए कपड़े रखे हैं न, उन्हीं में से चद्दर उठा ला।

रतन : और दरी?

प्रेमा : दरी तो यहीं रखी है कोने में। वह पड़ी तो है।

रामस्वरूप : (दरी उठाते हुए।) और बीबी के कमरे में से हारमोनियम उठा ला और सितार भी। . . . जल्दी जा। (रतन जाता है। पति–पत्नी तख्त पर दरी बिछाते हैं।)

प्रेमा : लेकिन वह तुम्हारी लाड़ली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।

रामस्वरूप : मुँह फुलाए?. . . और तुम उसकी माँ किस मर्ज़ की दवा हो? जैसे–तैसे करके तो वे लोग पकड़ में आए हैं। अब तुम्हारी बेवकूफी से सारी मेहनत बेकार जाए, तो मुझे दोष मत देना।

प्रेमा : तो मैं ही क्या करुँ? सारे जतन करके हार गई। तुम्हीं ने उसे पढ़ा–लिखाकर इतना सर चढ़ा कर रखा है। मेरी समझ में तो ये पढ़ाई–लिखाई का जंजाल आता नहीं। अपना जमाना अच्छा था। 'आ' 'ई' पढ़ ली, गिनती सीख ली और बहुत हुआ तो स्त्री–सुबोधिनी पढ़ ली। सच पूछो तो स्त्री–सुबोधिनी में ऐसी–ऐसी बातें लिखी हैं. . . ऐसी बातें कि क्या तुम्हारी बी.ए, एम.ए की पढ़ाई में होगी और आजकल के लच्छन ही अनोखे हैं. . .

रामस्वरूप : ग्रामोफोन बाजा होता है न?

प्रेमा : क्यों?

रामस्वरूप : दो तरह का होता है। एक तो आदमी का बनाया हुआ। उसे एक बार चलाकर चाहे रोक लो और दूसरा परमात्मा का बनाया हुआ। उसका रिकार्ड एक बार चढ़ा तो रुकने का नाम नहीं।

प्रेमा : हटो भी! तुम्हें ठिठोली सूझती रहती है। यह तो होता नहीं कि उस अपनी उमा को राह पर लाते। अब देर ही कितनी रही है उन लोगों के आने में?

रामस्वरूप : तो हुआ क्या?

प्रेमा : तुम्हीं ने तो कहा था कि जरा ठीक–ठीक करके नीचे लाना। आजकल तो लड़की कितनी ही सुंदर हो, बिना टीम–टाम के भला कौन पूछता है? इसी मारे मैंने तो पौडर–वौडर उसके सामने रखा था। पर उसे तो इन चीजों से न जाने किस जन्म की नफरत है। मेरा कहना था कि आँचल से मुँह लपेट लेट गई; भई मैं तो बाज आई तुम्हारी इस लड़की से।

रामस्वरूप : न जाने कैसे इसका दिमाग है। वरना आजकल की लड़कियों के सहारे तो पौडर का कारोबार चलता है।

प्रेमा : अरे, मैंने तो पहले ही कहा था इंट्रेंस ही पास करा लेते– लड़की अपने हाथ रहती और उतनी परेशानी उठानी न पड़ती। पर तुम तो . . .

रामस्वरूप : (बात काटकर) चुप , चुप . . . (दरवाजे में झाँकते हुए) तुम्हें कतई अपनी जुबान पर काबू नहीं है। कल ही बता दिया था कि उन लोगों के सामने जिक्र और ही ढंग से होगा। मगर तुम तो अभी से सब कुछ उगले देती हो। उनके आने तक तो न जाने क्या हाल करोगी।

प्रेमा : अच्छा बाबा, मैं न बोलूँगी, जैसी तुम्हारी मर्जी हो, करना । बस मुझे तो मेरा काम बता दो।

रामस्वरूप : तो उमा को जैसे–तैसे तैयार कर दो। न सही पाउडर। वैसे कौन बुरी है। पान लेकर भेज देना उसे और नाश्ता तो तैयार है न? (रतन का आना) आ गया रतन ! . . . इधर ला, इधर बाजा नीचे रख दे। चद्दर खोल। पकड़ तो जरा उधर से। (चद्दर बिछाते हैं।)

प्रेमा : नाश्ता तो तैयार है। मिठाई तो वे लोग ज्यादा खाएँगे नहीं। कुछ नमकीन चीज़ें बना दी हैं। फल रखे हैं ही। चाय तैयार है और टोस्ट भी। मगर हाँ मक्खन? मक्खन तो आया ही नहीं।

रामस्वरूप : क्या कहा? मक्खन नहीं आया? तुम्हें भी किस वक्त याद आई है। जानती हो कि मक्खनवाले की दुकान दूर है, पर तुम्हें तो ठीक वक्त पर कोई बात सुझती ही नहीं। अब बताओ रतन मक्खन लाए कि यहाँ का काम करे। दफ्तर के चपरासी से कहा था आने के लिए सो नखरों के मारे . . .

प्रेमा : यहाँ का काम कौन–सा ज्यादा है? कमरा तो सब ठीक–ठाक है ही, बाजा–सितार आ ही गया।

नाश्ता यहाँ बराबरवाले कमरे में करना है– ट्रे में रखा हुआ है, सो तुम्हें पकड़ा दूँगी। एकाध चीज खुद ले आना। इतनी देर से रतन मक्खन ले ही आएगा। दो आदमी ही तो हैं।

रामस्वरूप : हाँ, एक तो बाबू गोपाल प्रसाद और दूसरा खुद लड़का है। देखो, उमा से कह देना कि जरा करीने से आए। ये लोग जरा ऐसे ही हैं। गुस्सा तो मुझे बहुत आता है, इनके दकियानूसी ख्यालों पर। खुद पढ़े–लिखे हैं, सभा–सोसाइटियों में जाते हैं, मगर लड़की चाहते हैं ऐसी कि ज्यादा पढ़ी–लिखी न हो।

प्रेमा : और लड़का?

रामस्वरूप : बताया तो था तुम्हें। बाप सेर है, तो लड़का सवा सेर। बी.एस.सी के बाद लखनऊ में ही तो पढ़ता है, मेडिकल कॉलेज में। कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है तालीम का दूसरा। क्या करूँ मजबूरी है। मतलब अपना है, वरना इन लड़कों और बापों को ऐसी कोरी–कोरी सुनाता कि ये भी . . .

रतन : (जो अब तक दरवाजे के पास चुपचाप खड़ा हुआ था, जल्दी–जल्दी) बाबूजी, बाबूजी!

रामस्वरूप : क्या है?

रतन : कोई आए हैं।

रामस्वरूप : (दरवाजे से बाहर झाँककर, जल्दी से मुँह अंदर करते हुए) अरे, ऐ प्रेमा, वे आ भी गए (नौकर पर नजर पड़ते ही) और तू यहीं खड़ा है, बेवकूफ! गया नहीं मक्खन लाने? सब चौपट कर दिया। . . . अबे, उधर से, अंदर के दरवाजे से जा (नौकर अंदर जाता है) . . . और तुम जल्दी करो। प्रेमा, उमा को समझा देना थोड़ा–सा गा देगी। (प्रेमा जल्दी से अंदर की तरफ जाती है। उसकी धोती जमीन पर रखे हुए बाजे से अटक जाती है।)

प्रेमा : उँह! यह बाजा नीचे ही रख गया है। कम्बख्त।

रामस्वरूप : तुम जाओ, मैं रखे देता हूँ . . . . .जल्दी। (प्रेमा जाती है। बाबू रामस्वरूप बाजा उठाकर रखते हैं। किवाड़ों पर दस्तक।)

रामस्वरूप : हँ–हँ–हँ । आइए, आइए। . . .हँ–हँ–हँ।

(बाबू गोपाल प्रसाद और उसके लड़के शंकर का आना। आँखों से लोक–चतुराई टपकती है। आवाज से मालूम होता है काफी अनुभवी और फितरती महाशय है। उनका लड़का कुछ खीसे निपोरनेवाले नौजवानों में से है, आवाज पतली है और खिसियाहट भरी। झुकी कमर इसकी खासियत है।)

रामस्वरूप : (अपने दोनों हाथ मलते हुए) हँ. . . हँ इधर तशरीफ लाइए, इधर . . .। (बाबूगोपाल प्रसाद बैठते हैं मगर बेंत गिर पड़ता है।)

रामस्वरूप : यह बेंत! लाइए मुझे दीजिए कोने में रख देता हूँ। (सब बैठते हैं।) हँ–हँ! . . . मकान ढूँढ़ने में कुछ तकलीफ तो नहीं हुई?

गो. प्रसाद : (खँखारकर) नहीं, तांगेवाला जानता था। . . . और फिर हमें तो यहाँ आना ही था, रास्ता मिलता कैसे नहीं?

रामस्वरूप : हँ–हँ–हँ, यह तो आपकी बड़ी मेहरबानी है। मैंने आपको तकलीफ तो दी।

गो. प्रसाद : अरे नहीं साहब! जैसा मेरा काम, वैसा आपका काम, आखिर लड़के की शादी तो करनी ही है। बल्कि यों कहिए कि मैंने आपके लिए खासी परेशानी कर दी।

रामस्वरूप : हँ–हँ! यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे। हम तो आपके हँ–हँ सेवक ही हैं। हँ–हँ (थोड़ी देर बाद लड़के की तरफ मुखातिब होकर) और कहिए, शंकर बाबू, कितने दिनों की छुट्टियाँ हैं?

शंकर : जी, कालेज की छुट्टियाँ नहीं हैं। वीक एंड में चला आया था।

रामस्वरूप : आपके कोर्स खत्म होने में तो अब साल भर रहा होगा?

शंकर : जी, यही कोई साल दो साल।

रामस्वरूप : साल दो साल?

शंकर : हँ–हँ–हँ! . . . जी, एकाध साल का मार्जिन रखता हूँ. . . . . .

गो. प्रसाद : बात यह है साहब कि यह शंकर एक साल बीमार हो गया था। क्या बताएँ, इन लोगों को इसी उम्र में सारी बीमारियाँ सताती हैं। एक हमारा ज़माना था कि स्कूल से आकर दर्जनों कचौड़ियाँ उड़ा जाते थे, मगर फिर जो खाना खाने बैठते, तो वैसे–की–वैसी ही भूख।

रामस्वरूप : कचौड़ियाँ भी तो उस जमाने में पैसे की दो आती थीं।

गो. प्रसाद : जनाब, यह हाल था कि चार पैसे में ढेर–सी मलाई आती थी और अकेले दो आने की हजम करने की ताकत थी, अकेले! और अब तो बहुतेरे खेल वगैरह होते हैं स्कूलों में। तब न वॉलीबॉल जानता था, न टेनिस, न बैडमिंटन। बस, कभी हॉकी या कभी क्रिकेट कुछ लोग खेला करते थे। मगर मजाल कि कोई कह जाए कि यह लड़का कमजोर है। (शंकर और रामस्वरूप खीसे निपोरते हैं।)

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! उस जमाने की बात ही दूसरी थी। हँ–हँ . . .

गो. प्रसाद : (जोशीली आवाज में) और पढ़ाई का यह हाल था कि एक बार कुर्सी पर बैठे कि बारह घंटे की सिटिंग हो गई, बारह घंटे! जनाब, मैं सच कहता हूँ कि उस जमाने का मैट्रिक भी वह अंग्रेजी लिखता था फर्राटे की, कि आजकल के एम. ए. भी मुकाबला नहीं कर सकते।

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! यह तो है ही।

गो. प्रसाद : माफ कीजिएगा बाबू रामस्वरूप, उस ज़माने की जब याद आती है, अपने को ज़ब्त करना मुश्किल हो जाता है।

रामस्वरूप : हँ–हँ–हँ ! . . जी हाँ, वह तो रंगीन ज़माना था, रंगीन जमाना! हँ–हँ–हँ . . . (शंकर भी ही ही करता है।)

गो. प्रसाद : (एक साथ अपनी आवाज़ और तरीका बदलते हुए) अच्छा तो साहब, फिर बिजिनेस की बातचीत हो जाए।

रामस्वरूप : (चौंककर) बिजिनेस? बिजि. . . (समझकर) आह! . . .अच्छा–अच्छा! लेकिन जरा नाश्ता तो कर लीजिए। (उठते हैं।)

गो. प्रसाद : यह सब आप क्यों तकल्लुफ करते हैं?

रामस्वरूप : हँ–हँ तकल्लुफ किस बात का है? हँ–हँ! यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ लाए। वरना मैं किस काबिल हूँ। हँ–हाँ– माफ कीजिएगा जरा। अभी हाजिर हुआ। (अंदर जाते हैं।)

गो. प्रसाद : (थोड़ी देर बाद दबी आवाज़ में) आदमी तो भला है। मकान–वकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती। पता चले, लड़की कैसी है?

शंकर : जी . . .

(कुछ खँखारकर इधर–उधर देखता है।)

गो. प्रसाद : क्यों क्या हुआ?

शंकर : कुछ नहीं।

गो. प्रसाद : झुककर क्यों बैठते हो? ब्याह तय करने आए, तो कमर सीधी करके बैठो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की बैक बोन . .. .

(इतने में बाबू रामस्वरूप आते हैं, हाथ में चाय की ट्रे लिए हुए। मेज पर रख देते हैं।)

गो. प्रसाद : आखिर आप माने नहीं।

रामस्वरूप : (चाय प्याले में डालते हुए) हँ–हँ–हँ? आपको विलायती चाय पसंद है या हिन्दुस्तानी?

गो. प्रसाद : नहीं–नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिए। और चीनी भी ज्यादा डालिएगा। मुझे तो भाई यह नया फैशन पसंद नहीं। एक तो वैसे ही चाय में पानी काफी होता है और फिर चीनी भी नाम के लिए डाली जाए, तो जायका क्या रहेगा?

रामस्वरूप : हँ–हँ। कहते तो आप सही हैं। (प्याला पकड़ाते हुए)

शंकर : (खँखारकर) सुना है, सरकार अब ज्यादा चीनी लेनेवालों पर टैक्स लगाएगी।

गो. प्रसाद : (चाय पीते हुए) हूँ। सरकार जो चाहे, सो कर ले, पर अगर आमदनी करनी है, तो सरकार को बस एक ही टैक्स लगाना चाहिए।

रामस्वरूप : (शंकर को प्याला पकड़ाते हुए) वह क्या?

गो. प्रसाद : खूबसूरती पर टैक्स! (रामस्वरूप और शंकर हँस पड़ते हैं।)

मजाक नहीं साहब, यह ऐसा टैक्स है जनाब कि देने वाली भी चूँ न करेंगी। बस शर्त यह है कि औरत पर यह छोड़ दिया जाए कि वह अपनी खूबसूरती के स्टैंडर्ड के माफ़िक अपने ऊपर टैक्स तय कर ले, फिर देखिए सरकार की कैसी आमदनी बढ़ती है।

रामस्वरूप : (जोर से हँसते हुए) वाह–वाह! खूब सोचा आपने। वाकई आजकल यह खूबसूरती का सवाल भी बेढब हो गया है। हम लोगों के जमाने में तो यह कभी उठता भी न था। (तश्तरी गोपाल प्रसाद की तरफ बढ़ाते हैं।) लीजिए।

गो. प्रसाद : (समोसा उठाते हुए) कभी नहीं साहब, कभी नहीं।

रामस्वरूप : (शंकर की तरफ मुखातिब होकर) आपका क्या ख्याल है, शंकर बाबू?

रामस्वरूप : किस मामले में?

रामस्वरूप : यही कि शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए?

गो. प्रसाद : (बीच में ही) यह बात दूसरी है कि बाबू रामस्वरूप, मैंने आपसे पहले ही कहा था, लड़की का खूबसूरत होना निहायत जरूरी है। कैसे भी हो, चाहे पौडर वगैरह लगाए, चाहे वैसे ही। बात यह है कि हम आप मान भी जाएँ, मगर घर की औरतें तो राजी नहीं होतीं। आपकी लड़की तो ठीक है?

रामस्वरूप : जी हाँ, वह तो आप देख लीजिएगा।

गो. प्रसाद : देखना क्या! जब आपसे इतनी बातचीत हो चुकी है, तब तो यह रस्म ही समझिए।

रामस्वरूप : हँ–हँ, यह तो आपका मेरे ऊपर भारी अहसान है। हँ–हँ।

गो. प्रसाद : और जायचा (जन्मपत्री) तो मिल ही गया होगा?

रामस्वरूप : जी, जायचे का मिलना क्या मुश्किल बात है। ठाकुर जी के चरणों में रख दिया। बस खुद–ब–खुद मिला हुआ समझिए।

गो. प्रसाद : यह ठीक कहा आपने, बिल्कुल ठीक। (थोड़ी देर रुककर) लेकिन हाँ, यह जो मेरे कानों को भनक पड़ी है, यह गलत है न?

रामस्वरूप : (चौंककर) क्या?

गो. प्रसाद : यह पढ़ाई–लिखाई के बारे में! जी हाँ, साफ बात है साहब, हमें ज्यादा पढ़ी लिखी लड़की नहीं चाहिए। मेम साहब तो रखनी नहीं, कौन भुगतेगा उनके नखरों को। बस, हद–से–हद मैट्रिक पास होनी चाहिए।

क्यों शंकर?

शंकर : जी हाँ, कोई नौकरी तो करनी नहीं।

रामस्वरूप : नौकरी का तो कोई सवाल ही नहीं उठता।

गो. प्रसाद : और क्या साहब! देखिए, कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि जब आपने अपने लड़के को बी. ए, एम. ए. तक पढ़ाया है, तब उनकी बहुएँ भी ग्रेजुएट लीजिए। भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है। अरे मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं और पॉलिटिक्स वगैरह पर बहस करने लगीं, तब तो हो चुकी गृहस्थी। जनाब मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।

रामस्वरूप : जी हाँ, और मर्द की दाढ़ी होती है, औरतों की नहीं।

हँ–हँ–हँ

(शंकर भी हँसता है, मगर गोपाल प्रसाद गंभीर हो जाते हैं।)

गो. प्रसाद : हाँ, हाँ वह भी सही है। कहने का मतलब यह है कि कुछ बातें दुनिया में ऐसी हैं, जो सिर्फ मर्दों के लिए हैं और ऊँची तालीम भी ऐसी चीजों में से एक है।

रामस्वरूप : (शंकर से) चाय और लीजिए।

शंकर : धन्यवाद, पी चुका।

रामस्वरूप : (गोपाल प्रसाद से) आप?

गो. प्रसाद : बस साहब, अब तो खत्म ही कीजिए।

रामस्वरूप : आपने तो कुछ खाया ही नहीं। चाय के साथ टोस्ट नहीं थे। क्या बताएँ, वह मक्खन . . .

गो. प्रसाद : नाश्ता ही तो करना था साहब, कोई पेट तो भरना था नहीं। और फिर टोस्ट वोस्ट मैं खाता ही नहीं।

रामस्वरूप : हँ–हँ (मेज को एक तरफ सरका देते हैं। फिर अंदर के दरवाजे की तरफ मुँह कर जरा जोर से) अरे, जरा पान भिजवा देना . . . सिगरेट मँगवाऊँ?

गो. प्रसाद : जी नहीं।

(पान की तश्तरी हाथों में लिए उमा आती है। सादगी के कपड़े। गर्दन झुकी हुई। बाबू गोपाल प्रसाद आँखें गड़ाकर और शंकर छिपकर उसे ताक रहे हैं।)

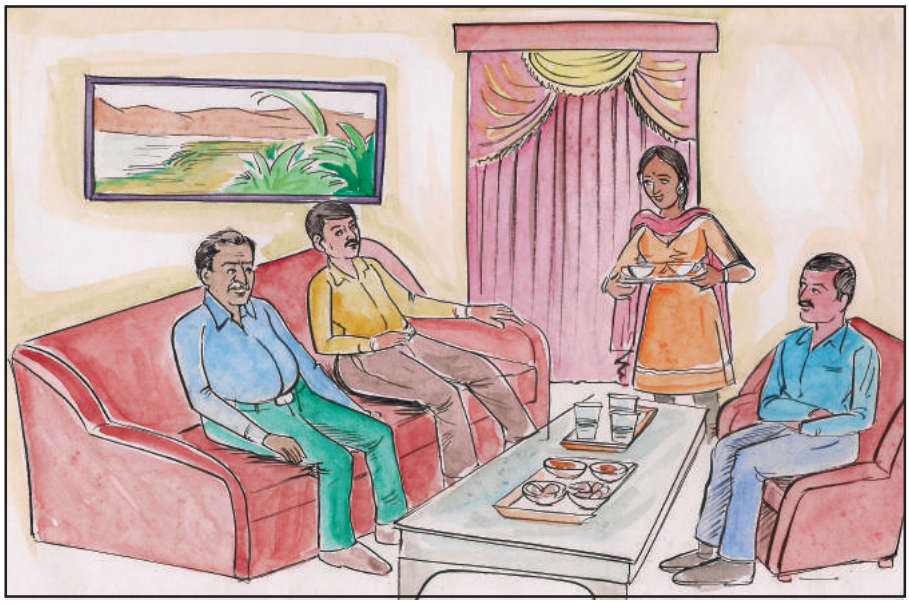

रामस्वरूप : हँ–हँ . . . हँ–हँ, आपकी लड़की है? लाओ बेटी, पान मुझे दो।

(उमा पान की तश्तरी अपने पिता को दे देती है। उस समय उसका चेहरा ऊपर को उठ जाता है, नाक पर रखा हुआ सोने की रिमवाला चश्मा दिखता है। बाप–बेटे चौंक उठते हैं।)

रामस्वरूप : (जरा सकपकाकर) जी, वह तो वह पिछले महीने में इसकी आँखें आ गई थीं, सो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है।

गो. प्रसाद : पढ़ाई लिखाई की वजह से तो नहीं है कुछ?

रामस्वरूप : नहीं साहब, वह तो मैंने अर्ज किया न।

गो. प्रसाद : हूँ। (संतुष्ट होकर कुछ कोमल स्वर में) बैठो बेटी!

रामस्वरूप : वहाँ बैठ जाओ उमा, उस तख्त पर, अपने बाजे के पास (उमा बैठती है।)

गो. प्रसाद : चाल में तो कुछ खराबी है नहीं। चेहरे पर भी छबि है. . . हाँ, कुछ गाना–बजाना सीखा है?

रामस्वरूप : जी हाँ, सितार भी और बाजा भी। सुनाओ तो उमा एकाध गीत सितार के साथ।

(उमा सितार उठाती है। थोड़ी देर बाद मीरा का मशहूर गीत, 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई' गाना शुरू कर देती है। स्वर से जाहिर है कि गाने का अच्छा ज्ञान है। उसकी आँखें शंकर की झेंपती–सी आँखों से मिल जाती हैं और वह गाते–गाते एकदम रुक जाती है।)

रामस्वरूप : क्यों, क्या हुआ? गाने को पूरा करो उमा!

गो. प्रसाद : नहीं–नहीं साहब, काफी है। लड़की आपकी अच्छा गाती है।

(उमा सितार रखकर अंदर जाने को उठती है।)

गो. प्रसाद : अभी ठहरो, बेटी।

रामस्वरूप : थोड़ा और बैठी रहो, उमा।

(उमा बैठती है।)

गो. प्रसाद : (उमा से) तो तुमने पेंटिंग भी सीखी है . . .

उमा : (चुप)।

रामस्वरूप : हाँ, वह तो मैं आपको बताना भूल ही गया। यह जो तस्वीर टँगी हुई है, कुत्तेवाली, इसी ने खींची है। और वह उस दीवार पर भी।

गो. प्रसाद : हूँ। यह तो बहुत अच्छा है। और सिलाई वगैरह?

रामस्वरूप : सिलाई तो सारे घर की इसी के जिम्मे रहती है, यहाँ तक कि मेरी कमीजें भी, हँ–हँ–हँ।

गो. प्रसाद : ठीक है। . . . लेकिन, हाँ बेटी, तुमने कुछ इनाम जीते हैं?

(उमा चुप। रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं, लेकिन उमा चुप है, उस तरह गर्दन झुकाए। गोपाल प्रसाद अधीर हो उठते हैं और रामस्वरूप सकपकाते हैं।)

रामस्वरूप : जवाब दो उमा। (गो. प्रसाद से) हँ– हँ जरा शरमाती है। इनाम तो इसने . . .

गो. प्रसाद : (जरा रुखी आवाज में) जरा मुँह भी तो खोलना चाहिए।

रामस्वरूप : उमा, देखो आप क्या कह रहे हैं? जवाब दो न।

उमा : (हल्की, लेकिन मजबूत आवाज में) क्या जवाब दूँ बाबू जी! जब कुर्सी, मेज बिकती है, तब दुकानदार कुर्सी, मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीददार को दिखला देता है, पसंद आ गई तो अच्छा है वरना. . .

रामस्वरूप : (चौककर खड़े हो जाते हैं) उमा, उमा!

उमा : अब मुझे कह लेने दो बाबू जी! ये जो महाशय मेरे खरीददार बनकर आए हैं, उनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होते? क्या उनको चोट नहीं लगती है? क्या वे बेबस भेड़–बकरियाँ हैं? जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख–भालकर.....?

गो. प्रसाद : (ताव में आकर) बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?

उमा : (तेज आवाज में) हाँ, और हमारी बेइज्जती नहीं होती, जो आप इतनी देर से नाप तौल कर रहे हैं? और जरा अपने इन साहबजादे से पूछिए कि अभी पिछले फरवरी में ये लड़कियों के हॉस्टल के इर्द–गिर्द क्यों घूम रहे थे, और वहाँ से क्यों भगाए गए थे?

शंकर : बाबू जी चलिए।

गो. प्रसाद : लड़कियों के हॉस्टल में? क्या तुम कॉलेज में पढ़ी हो?

(रामस्वरूप चुप)

उमा : जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की और न आपके पुत्र की तरह ताक–झाँककर कायरता दिखाई है। मुझे अपनी इज्जत, अपने मान का ख्याल तो है, लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे।

रामस्वरूप : उमा, उमा?

गो. प्रसाद : (खड़े होकर गुस्से में) बस हो चुका। बाबू रामस्वरूप आपने मेरे साथ दगा किया। आपकी लड़की बी.ए. पास है, आपने मुझसे कहा था कि सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है। लाइए . . . मेरी छड़ी कहाँ है? मैं चलता हूँ! (बेंत ढूँढ़कर उठाते हैं।) बी. ए. पास! उफफोह! गजब हो जाता! झूठ का भी कुछ ठिकाना है, आओ, बेटे, चलो. . . . (दरवाजे की ओर बढ़ते हैं।)

उमा : जी हाँ, जाइए, लेकिन घर जाकर जरा यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं– यानी बैकबोन, बैकबोन।

(बाबू गोपाल प्रसाद के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा है। उनके लड़के के रुआँसापन। दोनों बाहर चले जाते हैं। बाबू रामस्वरूप कुर्सी पर धम से बैठ जाते हैं। उमा सहसा चुप हो जाती है, लेकिन उसकी हँसी सिसकियों में तब्दील हो जाती है। प्रेमा का घबराहट की हालत में आना।)

प्रेमा : उमा, उमा . . . रो रही है।

(यह सुनकर रामस्वरूप खड़े होते हैं। रतन आता है।)

रतन : बाबू जी मक्खन।

(सब रतन की तरफ देखते हैं और परदा गिरता है।)

शब्दार्थ

मर्ज़ – बीमारी/रोग; **ग्रामोफोन** – एक तरह का यंत्र जिससे संगीत सुना जाता था; **इंट्रेंस** – प्रवेश; **दकियानूसी** – पुरातन पंथी, रुढ़िवादी; **तकल्लुफ** – शिष्टाचार, औपचारिकता; **बेबसी** – लाचारी।

अभ्यास

पाठ से

1. लड़केवालों के स्वागत में रामस्वरूप के घर में हो रही तैयारियों का वर्णन कीजिए।
2. पुराने ज़माने की लड़कियों और उमा के बीच क्या अंतर है?
3. उमा गोपाल प्रसाद से यह क्यों कहती है, ''घर जाकर यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी है भी या नहीं?''
4. पाठ के आधार पर उमा का चरित्र–चित्रण कीजिए।
5. लड़केवालों के लौटने के बाद उमा की हँसी सिसकियों में क्यों तब्दील हो गई?
6. उमा के पिता द्वारा अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाना और विवाह के समय उसे छिपाना। यह विरोधाभास उनकी किस विवशता को दिखाता है?

पाठ से आगे

1. पढ़ी–लिखी लड़की के घर में आ जाने से स्थितियाँ किस प्रकार बदलती हैं? अपना उत्तर तर्क सहित लिखिए।
2. क्या लड़के और लड़कियों की शिक्षा व्यवस्था अलग–अलग तरह की होनी चाहिए? कारण बताते हुए अपना उत्तर लिखिए।
3. ''अब मुझे कह लेने दो बाबूजी! ये जो महाशय खरीददार बनकर आए हैं। उनसे ज़रा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होते? क्या उनको चोट नहीं लगती है? क्या वे बेबस भेड़–बकरियाँ हैं जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख–भालकर . . .?''

   (क) इस वक्तव्य में उमा ने किन प्रवृत्तियों पर चोट की है?

   (ख) वक्तव्य के अंत में अधूरे छोड़े गए वाक्य को पूरा कीजिए।
4. रामस्वरूप अपनी बेटी की पढ़ाई–लिखाई छुपाते हैं और गोपाल प्रसाद अपने बेटे की कमज़ोरियों पर पर्दा डालते हैं। क्या आपको उन दोनों का यह व्यवहार उचित लगता है? अपने पक्ष के समर्थन में तर्क दीजिए।

भाषा के बारे में

1. पाठ में आए इन मुहावरों और लोकोक्ति के अर्थ लिखकर उनका प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए–

   (क) बाप सेर है तो बेटा सवा सेर

   (ख) खींसे निपोरना

(ग) काँटों में घसीटना

(घ) चूँ न करना

(ङ) कानों में भनक पड़ना

(च) आँखें गड़ाकर देखना

2. इन वाक्यों के रेखांकित शब्दों को उनके हिंदी पर्यायवाची शब्दों से इस तरह बदलिए कि वाक्य का अर्थ न बदले–

(क) तुम्हारी बेवकूफ़ी से सारी मेहनत बेकार न हो जाए।

(ख) लड़कियों के दिल नहीं होते।

(ग) उनके दकियानूसी खयालों पर मुझे गुस्सा आता है।

(घ) उसकी हँसी सिसकियों में तब्दील हो जाती है।

(ङ) चीनी नाम के लिए डाली जाए तो ज़ायका क्या रहेगा?

3. हिंदी में कुछ शब्द पुल्लिंग रूप में प्रयोग किए जाते हैं किंतु उनके पर्यायवाची उर्दू शब्द स्त्रीलिंग रूप में है।
(क) उदाहरणों को समझते हुए तालिका पूरी कीजिए–

	हिंदी पुल्लिंग	उर्दू स्त्रीलिंग
उदाहरण–	मार्ग	राह
	विलंब	देर
	रोग	————————
	स्वर	————————
	व्यायाम	————————
	चित्र	————————

(ख) परिवर्तित उर्दू स्त्रीलिंग शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

4. पाठ में आए इन शब्दों को देखिए–

'टोस्ट–वोस्ट', पेंटिंग–वेंटिंग, पढ़ाई–वढ़ाई

शब्दों के इस तरह के युग्म में पहला शब्द सार्थक होता है और दूसरा निरर्थक। इन शब्दों में निरर्थक शब्द

के स्थान पर 'आदि' या 'वगैरह' लिखने से भी शब्दों के अर्थ में कोई बदलाव नहीं होता है। जैसे– 'टोस्ट–वगैरह' को 'टोस्ट–आदि' भी लिखा जा सकता है।

अपनी बातचीत में आमतौर पर प्रयोग में आने वाले 20 ऐसे ही शब्दों को लिखिए।

5. नीचे एक बाल नाटिका के कुछ संवाद दिए गए हैं। खिलाड़ियों के दो दलों के बीच संवाद हो रहा है। दल एक के कथन पूरे–पूरे दिए गए हैं, किंतु दल दो के कथन नहीं दिए गए हैं। आप अपनी समझ के अनुसार दल दो के कथनों को लिखिए।

दल एक – अरे, तुम लोग कहाँ जा रहे हो?

दल दो – ——————————————————

दल एक – क्या? तिकोने मैदान में? किसलिए?

दल दो – ——————————————————

दल एक – नहीं, तुम वहाँ नहीं खेल सकते। वह हमारा मैदान है, क्योंकि हमने उसे पहले ढूँढ़ा है।

दल दो – ——————————————————

दल एक – नहीं, तुम कोई और जगह ढूँढ़ो।

दल दो – ——————————————————

दल एक – हम नहीं मानते। वह हमारा मैदान है।

दल दो – ——————————————————

दल एक – तुम झगड़ा करना चाहते हो?

दल दो – ——————————————————

दल एक – आओ, वहाँ खड़े मत रहो।

दल दो – ——————————————————

योग्यता विस्तार

1. महिलाएँ आजकल कई क्षेत्रों में सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं। क्षेत्र का नाम लिखकर उस क्षेत्र की सफल/प्रसिद्ध महिलाओं के नाम लिखिए–

क्षेत्र	कार्य/विधा	उल्लेखनीय महिला
उदाहरण– संगीत	वायलिन वादन	एन. राजम

BTNNKZ

2. दहेज–प्रथा पर लगभग 300 शब्दों में एक निबंध लिखिए।
3. समाचार पत्र–पत्रिकाओं से दहेज प्रताड़ना से संबद्ध खबरों की कतरन एकत्र कर विद्यालय की भित्ति–पत्रिका में लगाइए।

●●●

निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार

बच्चे किसी भी देश के सर्वोच्च संपत्ति होने के साथ–साथ भविष्य के संभावित मानव संसाधन भी है इस बात को दृष्टिगत रखते हुए संविधान के 86वें संशोधन अधिनियम 2002 द्वारा अनुच्छेद 21(A) जोड़ा गया, जो यह प्रावधान करता है कि राज्य कानून बनाकर 6 से 14 आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा उपबंध करायेगा।

इसी प्रकार अप्रैल 2002 में कश्मीर राज्य को छोड़कर संपूर्ण भारत में यह लागू हुआ। इस अधिकार को व्यवहारिक रूप देने के लिए संसद में अनुच्छेद 45 के तहत निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 पारित हुआ तथा अप्रैल 2010 से यह लागू हुआ।